पेप्टिक अल्सर

के बारे में

सही जानकारी

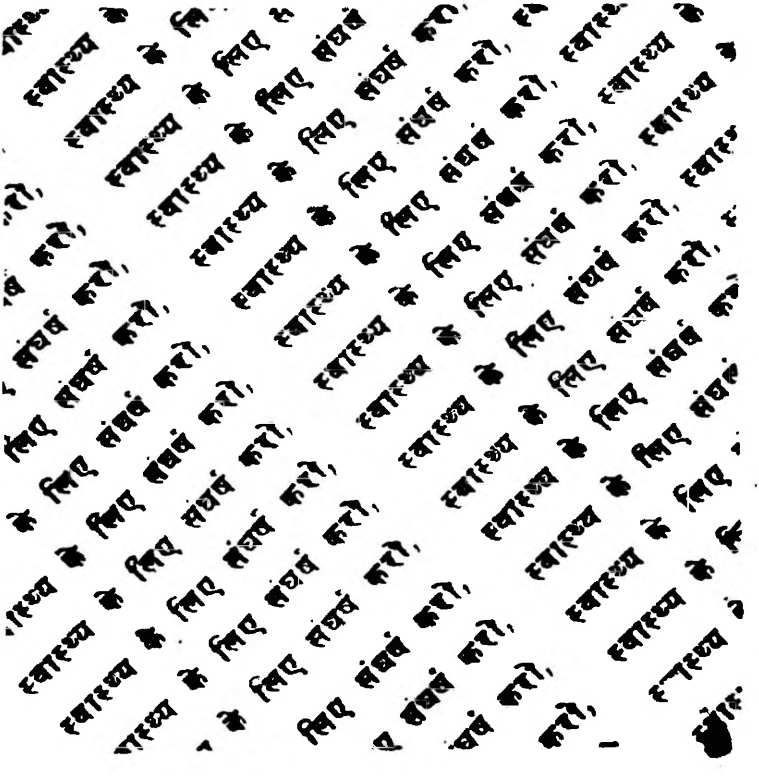

शहीद अस्पताल, दल्ली–राजहरा

प्रकाशन काल : जून १९९१

शहीद अस्पताल की
स्वास्थ्य पत्रिका "स्वास्थ्य संगवारी" का एक अंक पर आधारित

कोई भी व्यक्ति या संस्था लोगों में स्वास्थ्य-शिक्षा फैलाने के लक्ष्य से इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी तरीके से इस्तेमाल कर सकता है।

सहायता राशि : २ रुपये

प्रतियों के लिए लिखें :
शहीद अस्पताल
दल्ली राजहरा
दुर्ग (म.प्र.) ४९१ २२८

शहीद अस्पताल, दल्ली राजहरा द्वारा प्रकाशित
व
विजय प्रिंटिंग प्रेस, बालोद द्वारा मुद्रित

समय पर खाना न मिलने से या ज्यादा मिर्च मसालेदार खाना लेनें से पेट में जलन तो कभी कभी होती है, लेकिन जब किसी को लगातार पेट या छाती में जलन होती है, मुंह में खट्टा पानी आता है, ऊपर पेट के बीच में दर्द होता है, तो डाक्टर के पास जाना पड़ता है।

डाक्टरी भाषा में इस बीमारी का नाम 'पेप्टिक अल्सर' है। आप इस बीमारी को गैस्ट्रिक की बीमारी कहते हैं।

पेप्टिक अल्सर क्या है ?

"अल्सर" का मतलब – छाला या घाव।

आमाशय या छोटी आंत के प्रथम भाग में बननें वाला छाला पेप्टिक अल्सर कहलाता है।

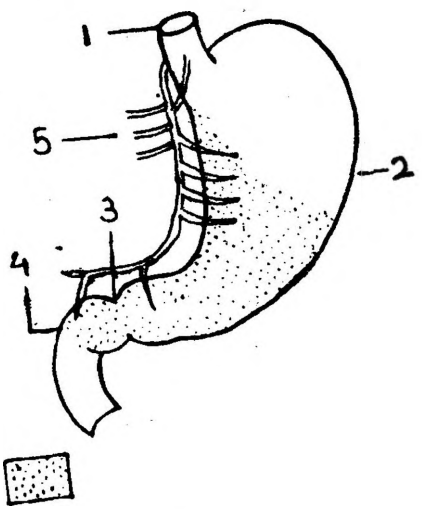

1. ग्रास नली
2. आमाशय
3 पाइलोरस
4. ड्योडिनम
5. वेगस नाड़ी

ये क्षेत्र, जहां पर प्रायः पेप्टिक अल्सर बनते हैं।

आमाशय में बनने वाले छाला को गैस्ट्रिक अल्सर एवं छोटी आंत के प्रथम भाग यानि ड्योडिनम में बनने वाले छाला को ड्योडिनल अल्सर कहा जाता है।

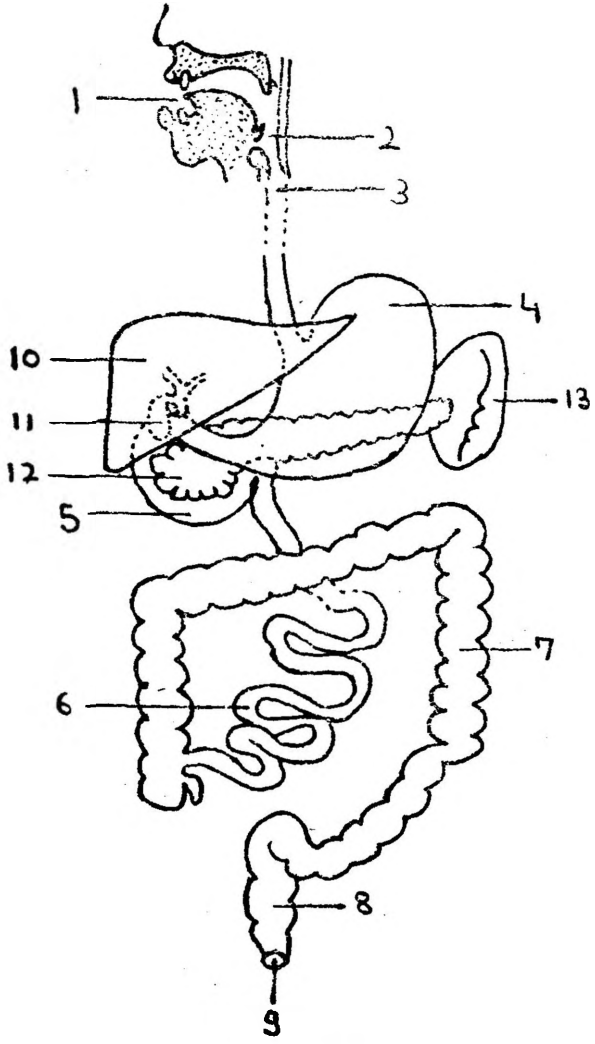

हमारे पाचन यंत्र :

1. जीभ
2. फैरिक्स
3. ग्रास नली
4. आमाशय
5. ड्योडिनम
6. छोटी आंत
7. बड़ी आंत
8. मलाशय
9. गुदा
10. जिगर
11. पित्ताशय
12. अग्न्याशय
13 तिल्ली

हमारे पाचन यंत्र : संक्षिप्त परिचय

हमारा शरीर एक इंजन की तरह काम करता है। इंजन में कोयला, पेट्रोल या डीजल जलने से उर्जा पैदा होती है और वह चलता है। खाद्य के जलने से यानि पचने से हमें उर्जा मिलती है।

हमारे भोजन मुख्यतः तीन किस्म के होते हैं। कार्बोहाइड्रेट या शक्कर जैसे खाद्य व फैट यानि तेल–चर्बी से उर्जा पैदा होती है। प्रोटीन से हमारे शरीर के गठन व मरम्मत के काम होते हैं। इन तीन किस्म के भोजन को पचाना यानि छोटे-छोटे कणों में बांटना पड़ता है जिससे वे खून में मिल सकें।

हमारे पाचन यंत्र की शुरुआत मुंह से होती है और अंत गुदा में। सामने के दांतों से हम खाद्य को काटते हैं और पीछे के दांतों से चबाकर उसे छोटे-छोटे टुकड़े करते हैं। मुंह में इसके साथ लार मिलता है जिससे कुछ शक्कर पचता हैं और खाद्य चिकना बनता है।

मुंह से खाद्य ग्रास नली से होते हुए आमाशय में पहुंचता है। आमाशय मांस पेशियों से बना हुआ एक थैला जैसा है। इसमें भोजन के साथ प्रोटीन को पचाने वाला रस पेप्सिन व हाइड्रोक्लोरिक एसिड मिलते हैं। आमाशय भी प्रोटीन से बना हुआ है, तो पाचन से बचाने के लिये आमाशय की सतह पर चिकने म्युकस (रेंवट) की मोटी तह बिछी रहती है।

आमाशय से खाद्य छोटी आंत में आता है। छोटी आंत के प्रथम भाग ड्योडिनम में पित्ताशय व अग्न्याशय के रस आते हैं व छोटी आंत के दीवार से भी कई पाचक रस निकलते हैं। इनसे तीनों किस्म के भोजन पच जाते हैं। फिर ये छोटी आंत के सतह से अवशोषित होकर रक्त में पहुंच जाते है। बड़ी आंत में पानी, नमक व विटामिन अवशोषित होने के बाद अनावश्यक पदार्थ मल के रुप में मलाशय में जमता है व गुदा से बाहर निकलता हैं।

अल्सर कैसे बनते हैं ?

हमारे पाचन यंत्र के परिचय से हम देख चुके हैं कि आमाशय व ड्योडिनम पर बिछी हुई चिकने रेंवट की तह इन्हें पेप्सिन व तेजाब से बचाती है।

इस व्यवस्था के टूट जाने पर पेप्टिक अल्सर बनते हैं।

ड्योडिनम से पित्त आमाशय में जाने पर गैस्ट्रिक अल्सर यानि आमाशय में घाव बन सकता है।

अल्सर बनने के कारण :

1. ज्यादा तेजाब निकलना।
2. आमाशय व ड्योडिनम के बीच के दरवाजा पाइलोरास खराब होने के कारण पित्त आमाशय में जाना।
3. दर्द-नाशक दवाईयां लेना।
4. काम का दबाव, मानसिक तनाव।
5. लम्बे बीमारी व बड़े चोट के मरीजों को भी पेप्टिक अल्सर हो सकते हैं।
6. शराब, चाय, काफी, बीड़ी सिगरेट व ज्यादा मिर्च मसालेदार खाना लेने वालों को ज्यादा पेप्टिक अल्सर होते हैं।

लक्षण :

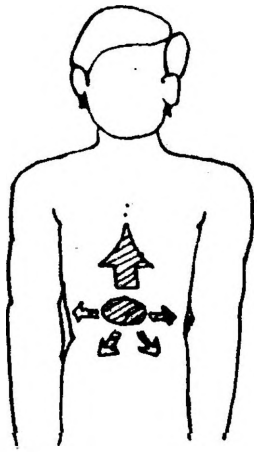

1. पेट दर्द – ऊपर पेट के बीच में दर्द होता है। कभी-कभी दर्द पेट के निचले भाग में, छाती के ऊपरी भाग में, कंधों में या सीधा कमर तक पहुंच जाता है।

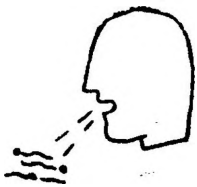

2. जी मिचलाना, उल्टी होना।

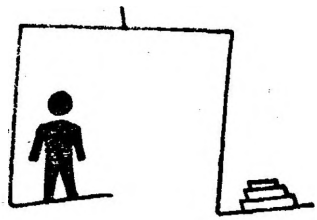

3. भूख न लगना, वजन घटना।

4. पेट व छाती में जलन होना, मुंह में खट्टा पानी आना।

5. खून की कमी।

रोग की पहचान के तरीके :

1. बैरियम मील एक्स-रे – रात भर भूखा रखने के बाद मरीज को सुबह सफेद रंग की बैरियम सल्फेट दी जाती है। यह ग्रास नली, आमाशय व ड्योडिनम के अंदर के स्तर को ढक लेती है। इसके बाद एक्स-रे लिया जाता है। अल्सर में बैरियम भरने के कारण एक्स-रे में उभार सा दिखाई देता है।

   आमतौर पर इस जांच के लिये 150–200 रु. खर्च होता है।

2. एण्डोस्कोपी – मुंह से जाने वाली दूरबीन से आमाशय व ड्योडिनम के छाला को देखा जाता है। कैंसर का शक होने पर घाव से छोटे टुकड़े भी लिये जा सकते हैं।

   इस जांच का खर्च 250–350 रुपये होता है।

3. आमाशय की तेजाब का परीक्षण

अल्सर की जटिलतायें :

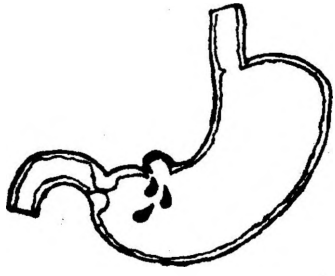

1. अल्सर से खून गिरना –
   खून उल्टी व काली खून टट्टी इसके लक्षण हैं।

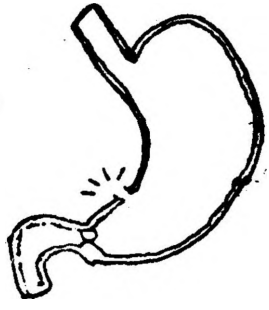

2. अल्सर छिद्र हो जाना –
   इस स्थिति में आमाशय या ड्योडिनम का पदार्थ पेट भर में फैल जाता है यह बहुत खतरनाक है।

3. **पाइलोरिक स्टेनोसिस –**
पाइलोरास व उसके आस-पास बनने वाले घाव के कारण सूजन होना या घाव सूखने पर नली के सिकुड़ने से यह स्थिति पैदा होती है। इसमें भोजन आमाशय से ड्यौडिनम में नहीं पहुंच सकते हैं।

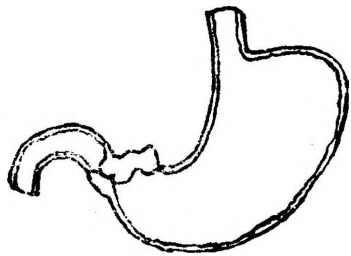

4. **अल्सर से कैंसर बनना –**

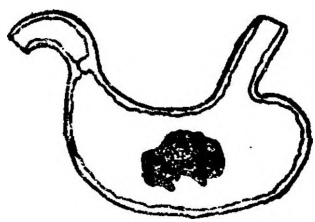

पेप्टिक अल्सर का इलाज : दवाइयों से

सामान्य उपाय :

1. शराब, चाय, काफी, बीड़ी - सिगरेट, मिर्च-मसालेदार भोजन व तेलहा चीज न लें।
2. मन को तनाव मुक्त रखने की कोशिश करें।
3. इन दवाईयों को न लें – दर्दनाशक दवाईयां : एस्प्रीन, एनालजिन फिनाइलब्युटाजोन, एण्डोमिथासिन आदि कभी न लें।

दर्द के कारण ज्यादा तकलीफ होने पर पैरासिटामल ले सकते हैं, लेकिन वह भी कम मात्रा में एवं भोजन के साथ लेनी चाहिये।

अल्सर भरने के लिये दवाईयां :

1. **एण्टासिड** – यह आमाशय के पाचक रस का अम्लत्व को कम कर देता है। गोली व तरल के रुप में एण्टासिड मिलती है।

   एण्टासिड दिन में तीन-चार बार हर भोजन के एक-एक घंटा बाद ली जानी चाहिये।

2. **अम्ल कम करने वाली दवाईयां** – एट्रोपिन, प्रापेन्थेलीन व हायोसिन एवं साइमीटिडीन व रेनीटिडीन से एसिड का स्राव काफी मात्रा में कम हो जाता है।

   डाक्टरी सलाह से ही यह दवाईयां लेनी चाहिये।

3. **श्लेष्मिक झिल्ली की रक्षक दवाईयां** – टी.डी बी., कार्बेनोजोलन व डी.जी.एल. भी कभी-कभी इस्तेमाल की जाती है।

4. **मानसिक तनाव कम करने की दवाई** – डायजिपाम भी कभी-कभी मरीज को दी जाती है।

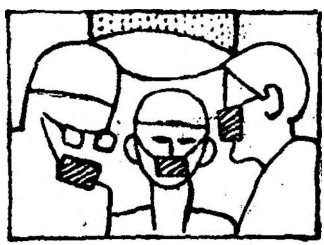

इलाज :
आपरेशन के द्वारा

अल्सर छिद्र होने पर तत्काल आपरेशन करना पड़ता है। अल्सर से अगर बहुत ज्यादा खून गिर रहा हो और दवाईयों से खून गिरना बंद न होता तब भी जल्दी आपरेशन करना जरुरी होता है।

पाइलोरिक स्टेनोसिस व कैंसर में आपरेशन आवश्यक है।

अगर अल्सर से बार-बार खून गिरते रहे या दवाइयों से तकलीफ कम न होती, तो भी आपरेशन कर लेना चाहिये।

परिशिष्ट

बाजार में मिलने वाली एन्टासिड व उसकी मात्रा

गोली :

एल्माकार्ब	Almacarb
एलुसिनल	Alucinol
एलुड्रक्स	Aludrox
एलुड्रक्स एम एच	Aludrox MH
डायजिन	Digene
डायभल	Diovol
जेलुसिल	Gelusil
जेलुसिल एम पी एस	Gelusil MPS
पलिक्रल फोर्ट टेबलेट	Polycrol Forte Tabs
साईलक्स फोर्ट	Silox - Forte
सिमेको टेबलेट	Simeco Tabs
आल्ट्रासिल	Ultrasil

मात्रा : 1 - 4 गोली भोजन के एक घंटा बाद । ज्यादा तकलीफ रहने पर हर भोजन के एक घंटा व तीन घंटे बाद-बाद ।

तरल :

एलुजेल डी एफ	Allujel DF
एलुसिनल सास्पेनशन	Alucinol Suspension
एलुड्रक्स एम एच सास्पेनशन	Aludrox MH Suspension
डायजिन जेल	Digene Gel
डायभल फोर्ट सास्पेनशन	Diovol Forte Suspension
जेलूसिल लिक्विड	Gelusil Liquid
जेलूसिल एम पी एस लिक्विड	Gelusil MPS Liquid
मियुकेन	Mucaine
पलिक्रल फोर्ट जेल	Polycrol Forte Gel
साईलक्स फोर्ट जेल	Silox Forte Gel
सिमेको	Simeco
आल्ट्रासिल लिक्विड	Ultrasil Liquid

मात्रा : 10 मि.ली. से 30 मि.ली. भोजन के एक घंटा बाद-बाद । ज्यादा तकलीफ रहनें पर हर भोजन के एक घंटा व तीन घंटे बाद-बाद ।

अल्सर से बचना चाहें तो...

❀ समय पर भोजन करें ।

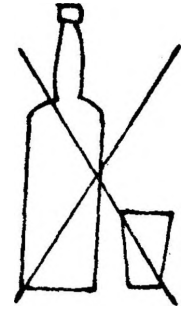

❀ शराब न पीयें ।

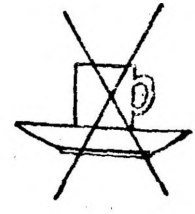

❀ चाय-काफी छोड़ दें ।

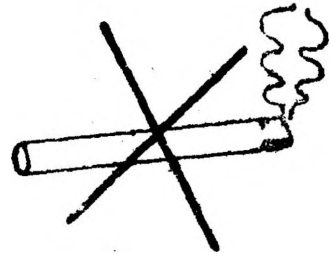

❀ बीड़ी-सिगरेट छोड़ दें ।

❀ मिर्च-मसाला कम लें ।

❀ बेहद जरुरी न होने पर दर्द-नाशक दवाईयां न लें ।